री
सर
ी मण्डन महाविद्यालय

महात्मा गाँधी (MAHATMA GANDHI) PAPER - II

गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को 'गांधीवाद' का नाम दिया जाता है। गाँधीवाद से अभिप्राय है गाँधीजी के सिद्धांतों, विचारों और मन्तव्यों का समूहीकरण। महात्मा गाँधी एक श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ, प्रथम कोटि के समाज सुधारक, महान राष्ट्रीय नेता और प्रगाढ़ देश भक्त थे। उनका वास्तविक उद्देश्य भारत का और फिर सारे संसार का सत्य और अहिंसा के आदर्शों पर नये सिरे से निर्माण करना था। भारत की स्वतंत्रता इस लक्ष्य को प्राप्त करने का एक साधन मात्र थी। ऐसी स्थिति में गाँधीजी ने समय - समय पर अपने लेखों, भाषणों और पत्रों में भावी समाज व्यवस्था के बारे में अपने विचार प्रकट किए थे। गाँधी के शिक्षाओं की शिक्षाओं को अकसर 'गांधीवाद' के नाम से संबोधित किया गया है। पर इस शब्द पर उन्हें स्वयं आपत्ति थी। उनका कहना था गांधीवाद नाम की कोई वस्तु नही है और मैं अपने बाद कोई सम्प्रदाय छोड़ना नही चाहता। मैं कभी इस बात का दावा नही करता कि मैंने कोई नया सिद्धांत चलाया है। गांधी जी के विचारों "गाँधी मार्ग" कहा जा सकता है। फिर भी गाँधीवाद शब्द बड़ा लोकप्रिय हो चुका है। इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम कराची में गांधी - इरविन समझौते के बाद एक सार्वजनिक सभा गांधीजी ने

अपने एक महत्वपूर्ण वाक्य में किया था। जब उन्होंने कहा था "गाँधी मर सकता है पर गाँधीवाद सदा जीवित रहेगा"।

गाँधीजी की कृतियां

गांधीजी ने अपने सिद्धांतों का प्रतिपादन प्रमुख रूप में दो पुस्तकों 'हिन्द स्वराज्य' तथा अपनी 'आत्मकथा' में किया है जिसका नाम 'मेरे सत्य के प्रयोग' रखा गया है। उनकी अन्य रचनाएँ — शान्ति और युद्ध में अहिंसा, नैतिक धर्म सत्याग्रह, सत्य ही ईश्वर है, सर्वोदय आदि। इसके अतिरिक्त गाँधीजी दक्षिण अफ्रिका में 'इण्डियन ओपीनियन' नामक साप्ताहिक पत्र का भारत में 'यंग इंडिया' हरिजन, नवजीवन, हरिजन सेवक, हरिजन बन्धु आदि पत्रों का संचालन करते हुए अपने विचारों का प्रतिपादन किया।

गाँधी जी की अहिंसा अवधारणा

प्राचीन काल से ही भारत में अहिंसा का अत्यधिक महत्व रहा है। योग दर्शनकार पातंजलि ने आत्मशुद्धि की साधना के पाँच यमों में अहिंसा को पहला स्थान दिया है। जैन धर्म में अहिंसा का अत्यधिक महत्व रहा है। महात्मा गाँधी पर इंग्लैंड से लौटने के बाद रायचन्द्र नामक जैन विद्वान का बड़ा प्रभाव पड़ा।